मोहनदास कर्मचन्द गॉधी के विचारो की वर्तमान शिक्षा में उपादेपता

डा0 गजेन्द्र पाल सिंह

असिस्टेंट प्रोफेशर

माडर्न कालेज आफ एजूकेशन

बन्थरा लखनऊ

9759768839

Email- gajendragangwar28@gmail.com

वर्तमान हिन्दी नाटको मे गांधी विचारधारा के प्रभाव के अध्ययन का यह प्रयास सर्वथा मौलिक हैं। हालांकि कुछ लेख अवश्य लिखे गये है लेकिन उनमें विश्लेषण और विस्तार का अभाव दिखाई देता हैं। एक ओर मौलिकता इस विषय के प्रतिपादन मे जोड़ी गई है वह यह कि नाटको मे गांधी विचार को लेकर अब तक जो लेखादि प्राप्त होते है उनमे गांधीविचार का मूल प्रतिफलन हुआ है पर इस अध्ययन मे उन नाटको को भी शामिल किया गया है जिनमे गांधीविचार ओझल रूप से तथा व्यंग्यात्मक रीति से प्रतिबिंबित हुआ है। गांधीयुग के अधिकाश साहित्यकार प्रत्यक्ष अथवा गुप्त तथा पूर्ण अथवा आंशिक रूप से विवेच्य विचारधारा से प्रभावित अवश्य है। इस नजरिये से नाटककारों को उनके दश कमे विभाजित करके अलग से मूल्यांकित किया जा सकता था परन्तु वह व्यवहारिक विदित न होता। इसलिए गांधी विचारधारा के व्यवहारिक तथा तात्विक रूप को ग्रहण करने वाले नाटककारो का वर्गीकरण करने की और कोई विशेष लगाव नही रहा। प्रस्तुत शोध मे प्रभाव की समीक्षा गांधी विचारधारा के प्रमुख तत्व को आधार पर किया गया है। इन मूल तत्वो को ध्यान मे रखते हुए उन प्रमुख नाटको को ही यहा शामिल किया गया है, जिनमे नाटककार इस प्रभाव को ग्रहण कर परिवेश निर्माण करने मे सफल हुए है। हिन्दी के मुख्य नाटको मे गांधी विचारधारा के अध्ययन तथा उसके प्रभाव के सम्यक मंथन की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पाच भागो मे विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय मे हिन्दी नाटक साहित्य की प्रस्तावना स्वरूप विहंगावलोकन प्रस्तुत किया गया है जिसमे नाटक के अभ्युदय तथा विकास को बताते हुए प्रसाद पूर्व युग (भारतेन्दु युग) प्रसादयुग तथा प्रसादोत्तर युग की नाट्य प्रवृत्तियो का अध्ययन (युग तथा) किया गया है। भारतेन्दु युग मे नाटक लेखन की शुरूआत हुई। जयशंकर प्रसाद के आविर्भाव के साथ नाट्य साहित्य मे नया उजाला प्रकट हुआ। प्रसाद युगीन नाट्य साहित्य पर तत्कालिक अहिसा नीति, सत्याग्रह, हिन्दु मुस्लिम एकता, धार्मिक समन्वय, आम सुधार रचनात्मक आन्दोलन आदि प्रवृत्तियो का विशेष प्रभाव हैं। इस समय राष्ट्रनेता गांधी जी की विचारधारा चरम सीमा पर थी और देश के एक कोने से दूसरे कोने तक का प्रभाव फैलने लग गया था।

प्रसादोत्तर युग मे हिन्दी नाट्य साहित्य दो दिशाओ मे मुख्य रूप से अग्रसर दिखाई देता है। पहला प्रवाह प्रसादकालीन परम्परा की दिशा मे आगे बढ़ा और दूसरा प्रवाह प्रसाद की नाट्यकला प्रतिक्रिया की दिशा मे आगे चला। इस युग मे भी धार्मिक कथानको को लेकर नाट्य–साहित्य की रचना हुई, किन्तु उनकी रूपरेखा बहुत कुछ अलग है। इस युग मे नाटककारो को आधुनिक युग से प्रभावित होकर वैज्ञानिक नजरिया अपनाया। अतिमानव और अतिरंजित भावनाओ को छोड़कर रूढ़िवादिता का वहिष्कार कर दिया। समस्या प्रधान नाटको को सामाजिक तथा राजनीतिक दो प्रकार की समस्याये मुख्य रूप से दिखाई देती है।

द्वितीय अध्याय मे गांधी जी के भारतीय राजनीति मे प्रवेश और उनके द्वारा आयोजित विभिन्न आन्दोलनो, सत्याग्रहो, रचनात्मक कार्यो आदि को देखते हुए विवेच्य विचारधारा के मूल तत्वो का अनुपालन किया गया है। बापू के आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनीतिक आदि विचारो के अध्ययन को मुख्य स्थिति मे रखा गया है। गांधी ने अपनी आत्मकथा को सत्य के साथ मेरे प्रयोगो की कहानी नाम दिया है। स्वंय अपना जीवन जिसने सत्य की खोज मे लगा दिया हो, वह कभी परिवर्तन के वगैर नही हो सकता। उसका निरन्तर विकास होना सहज व स्वभाविक है। बापू जी के जीवन मे यदि कोई वस्तु अपरिवर्तनीय थी, तो वह भी उनका सत्य के ऊपर विश्वास। उनके जीवन मे इस सत्य की अभिव्यक्तिया परिस्थितियो के अनुसार भिन्न–भिन्न रूपो मे हुई। अहिंसा के मत मे गांधी जी की जो धारणा थी वह उनके इस कथन से साफ हो जाती है कि यदि अहिंसा और कायरता मे से एक चीज का चयन करना हो तो मै अहिंसा का चुनाव करूंगा। गांधी जी कोई ऐसे विचारक या दार्शनिक नही थे जिसने अपना जीवन–दर्शन जीवन के शोरगुल से दूर रहकर अपने अध्ययन खण्ड के एकान्त मे बैठकर तैयार किया हो उन्होने किसी नये विचार या किसी नवीन प्रणाली को जन्म नही दिया और न ही अपने विचारो को किसी क्रमबद्ध रूप मे आभिव्यक्त करने की इच्छा की न ही उन्हे तर्क की कसौटी पर कसने का प्रयास किया। उनको हरसंभव उचित सिद्ध करने का प्रयास उन्होंने केवल तब किया जब उनका विरोध किया गया। एक आदर्श जीवन पथ पर मार्ग के रूप मे गांधीविचार मे वे सारी विशेषताए है जो कि एक वाद के लिए आवश्यक होगी है। इनका निश्चित जीवन के दर्शन है। गांधी जी ने अपने लिए प्रभु का राज्य प्राप्त करने और दूसरो को साहयता देने का प्रयास किया।

बापू की सबसे अधिक दर्शनीय और सबसे अधिक महात्वपूर्ण विशेषता यह थी कि किसी भी बात का उपदेश देने से पूर्व वे उसको अपने जीवन मे अमल मे लाते थे– यदि वह समाज के लिए किसी प्रयोग का प्रस्ताव करते है तो वे स्वंय इसकी अग्नि परीक्षा मे से गुजरते, उसका मूल्य पहले स्वंय चुकाते थे। गांधी जीदूसरो से त्याग करने की माग करने से पूर्व अपना सर्वस्व त्याग पर लगा देते।

गांधी विचार मे कला आत्ममंथन का आस्वाद है। इसके दो भेद कर सकते है– आंतरिक और वाह्य। इनमे से हम किस पर अधिक बल देते है यही प्रश्न है। मेरे विचार मे तो वाह्य का मूल्य तब तक कुछ नही है जब तक आन्तरिक विकास न हो। समस्त कला आन्तरिक विकास का ही रूप है। जो कला आत्मा को आत्यदर्शन करने की शिक्षा नही देती वह कला ही नही है। जिसमे सत्य की आभिव्यक्ति है, जिसमे उर्ध्वगामिनी पृकृति की साहयता होती है, वही परम सच्ची कला है।'' इस प्रकार गांधी विचार का केवल आस्तित्व मात्र ही नही है, बरन उसका भविष्य भी अत्याधिक चमकदार है। यही एक ऐसी उत्कृष्ट विचारधारा है, जिसकी ओर उसकी विपरीत विचारधारा उस`ले जाती हुई दिखाई देती है। समस्त मानव समुदाय के लोगो के जीवन मे गांधी जी का प्रवेश एक अभूतपूर्व घटना है। देश की राजनैतिक स्वतंत्रता के लिये प्रयासरत गांधी जी जानते थे कि आत्मिक सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता के अभाव मे राजनैतिक सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता के अभाव मे राजनैतिक स्वतत्रता का कोई अर्थ नही है। राष्ट्र की पूर्ण स्वतंत्रता की इच्छा रखने वाले बापू भारतीय मानव समुदाय मे गहराई तक उतरे। उन्होंने भारतीयों को उनके विस्तृत स्वरूप का बोध कराया। व्यक्तिगत स्वार्थ मे लगे हुए देशवासियों को गांधी जी ने सत्य व अहिंसा, त्याग सेवा वलिदान और मित्र जैसे व्यापक मानव समुदाय को संस्कारो से जुड़ाव रखने का प्रयास किया और उन्हे सबसे पहले खुद की मुक्ति की प्रेरणा दी। इस प्रकार गांधी जी ने भारतीयों के निस्पंद जीवन मे एक नई प्रेरणा तथा नई ऊर्जा का संचार किया।

संदर्भग्रंथ सूची

1–विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री– डा0 रामशकल पाण्डे अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा

2–शैक्षिक निबन्ध– डा0 रामशकल पाण्डे विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

3- Educational Philosphers- Chaube S.P. & Chaube A (2010) Agra: Vinod Pustak Mandir

4- The Philosophieal Bose of Education- Rus K, R, R (1956) Londan; University of Londan Press.